नीलो और कछुआ

नीलो और कछुआ

दूर, बहुत दूर, पृथ्वी के दूसरी ओर एक जगह है, ऐसी जैसी कहीं नहीं है....एक जगह जहाँ ज्वालामुखी पर्वतों से निकले लावे से कई छोटे-छोटे द्वीप बन गये हैं जिन पर कई पशु रहते हैं परन्तु वहाँ मनुष्य बहुत थोड़े हैं.

और उन में से एक दूर, बहुत दूर द्वीप पर एक बच्चा है जो अन्य बच्चों सा है, एक बच्चा जो पशुओं से प्रेम करता है और जिसे साहसिक कार्य अच्छे लगते हैं. उसके पिता एक मछुआरे हैं. उन्हें अपनी नाव के इंजन की मरम्मत करवानी है. इसलिए उन्होंने एक द्वीप के पास अपनी नाव रोक दी है. किसी बच्चे के पिता जब इंजन की मरम्मत करा रहे हों तो उस बच्चे के लिए नाव पर रहना आनन्ददायक नहीं होता. इसलिए मछुआरे और उसके बच्चे ने थोड़े फल एक थैली में रख लिए और द्वीप पर आ गए.

लड़के का नाम नीलो है. खेल से जब उसका मन भर गया तो वह अपने पिता की नाव की खोज में समुद्र के तट पर आ गया. चलो उसके साथ चलते हैं.

समुद्र तट पर काले पत्थर और चट्टानें हैं. उन पर खड़े, नीलो ने सी-लायन देखे. बीच-बीच में उनके सिर लहरों में ऊपर-नीचे हो रहे थे. और उनके आगे विशाल समुद्र है. लेकिन उसके पिता की नाव कहीं दिखाई नहीं दे रही थी.

नीलो चट्टानी किनारे पर आगे चलता गया. एक जगह पर उसे नाव का लंगर दिखाई दिया. उसकी टूटी हुई चैन पकड़े नीलो सोचने लगा कि पिता की नाव लहरों में बह गई होगी और अब उसके पिता को नाव खोज कर उसके पास आने में बहुत समय लग जाएगा.

नीलो के पास अब एक ही उपाय था, द्वीप की छानबीन करना.

एक उत्तेजित चीख ने नीलो का ध्यान भंग किया. एक विशाल नर सी-लायन गुस्से से उसकी ओर देख रहा था. मूंछोंदार चेहरे पर उसके नुकीले दाँत दिखाई दे रहे थे.

नीलो भागा. उसकी दौड़ मस्ती भरी न थी, दिल की धड़कन बढ़ाने वाली और भयभीत करने वाली दौड़ थी.

“पीछे हटो! पीछे हटो!” वह चिल्लाया. “मैं जा रहा हूँ!”

जब सी-लायन रुक कर वापस चल दिया तो नीलो जमे हुए लावे पर चलते हुए ज्वालामुखी के मुहाने की ओर चल दिया. फिर वह अचानक रुक गया.

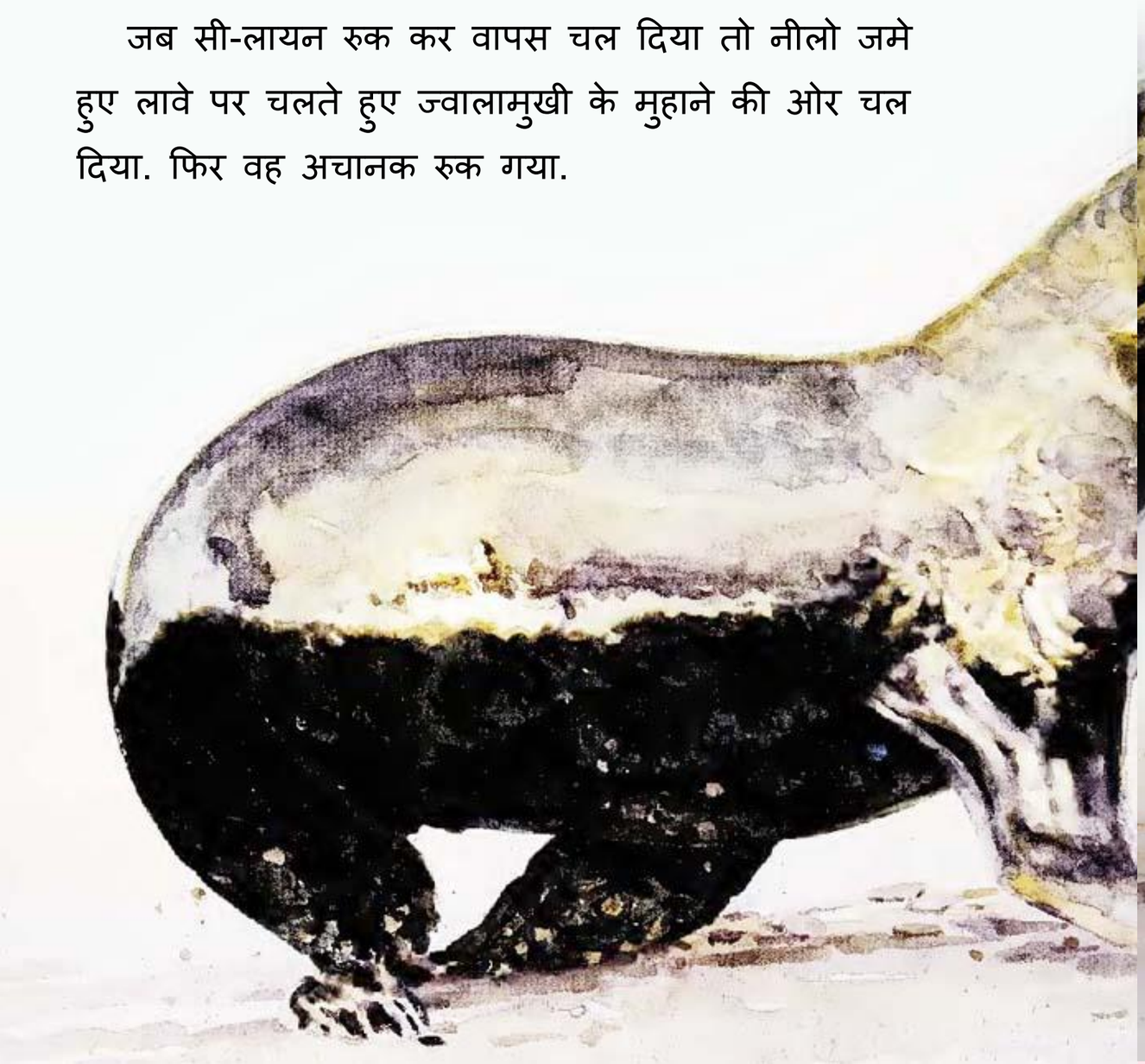

एक पक्षी की चहचाहट ने उसे आकर्षित किया था. एक लाल और काले रंग का नन्हा पक्षी हवा में नाच रहा था. फिर वह एक डाल पार आकर बैठ गया. नीलो पक्षी के बिलकुल निकट आ गया पर वह उड़ कर दूर नहीं गया.

"अगर मेरे भी पंख होते तो अपने पिता को खोजने के लिए मैं भी आकाश में बहुत ऊपर उड़ कर चला जाता. लेकिन मेरे पंख नहीं है इसलिए उन्हें ढूँढने के लिए मुझे ज्वालामुखी के ऊपर तक चढ़ कर जाना होगा," नीलो ने कहा. "अलविदा, नन्हे पक्षी!"

जैसे-जैसे नीलो ऊपर चढ़ता गया, हवा ठंडी होने लगी. अचानक धुंध ने उसे घेर लिया. उसे दिखाई न दे रहा था कि वह कहाँ चल रहा था. ज्वालामुखी की सीधी चढ़ाई चढ़ते हुए कई बार उसके पाँव फिसल गये. लेकिन हर ओर फैली धुंध के बावजूद वह ज्वालामुखी के मुहाने तक पहुँच गया.

नीलो मुहाने के किनारे के साथ-साथ चलता रहा. अचानक धुंध से बाहर निकल कर वह धूप में आ गया. नीलो ने झुक कर ज्वालामुखी के अंदर देखा, उसे लगा कि वह एक विशाल सूप बाउल के किनारे पर बैठा एक छोटे से कीट समान था.

एक बड़ा पक्षी ऊपर उड़ रहा था. वह नीचे, और नीचे आया और काई से ढके हुए एक पेड़ पर बैठ गया. नीलो ने उस पक्षी की आँखों में देखा और सोचने लगा कि क्या उन आँखों ने उसके पिता की नाव को देखा था.

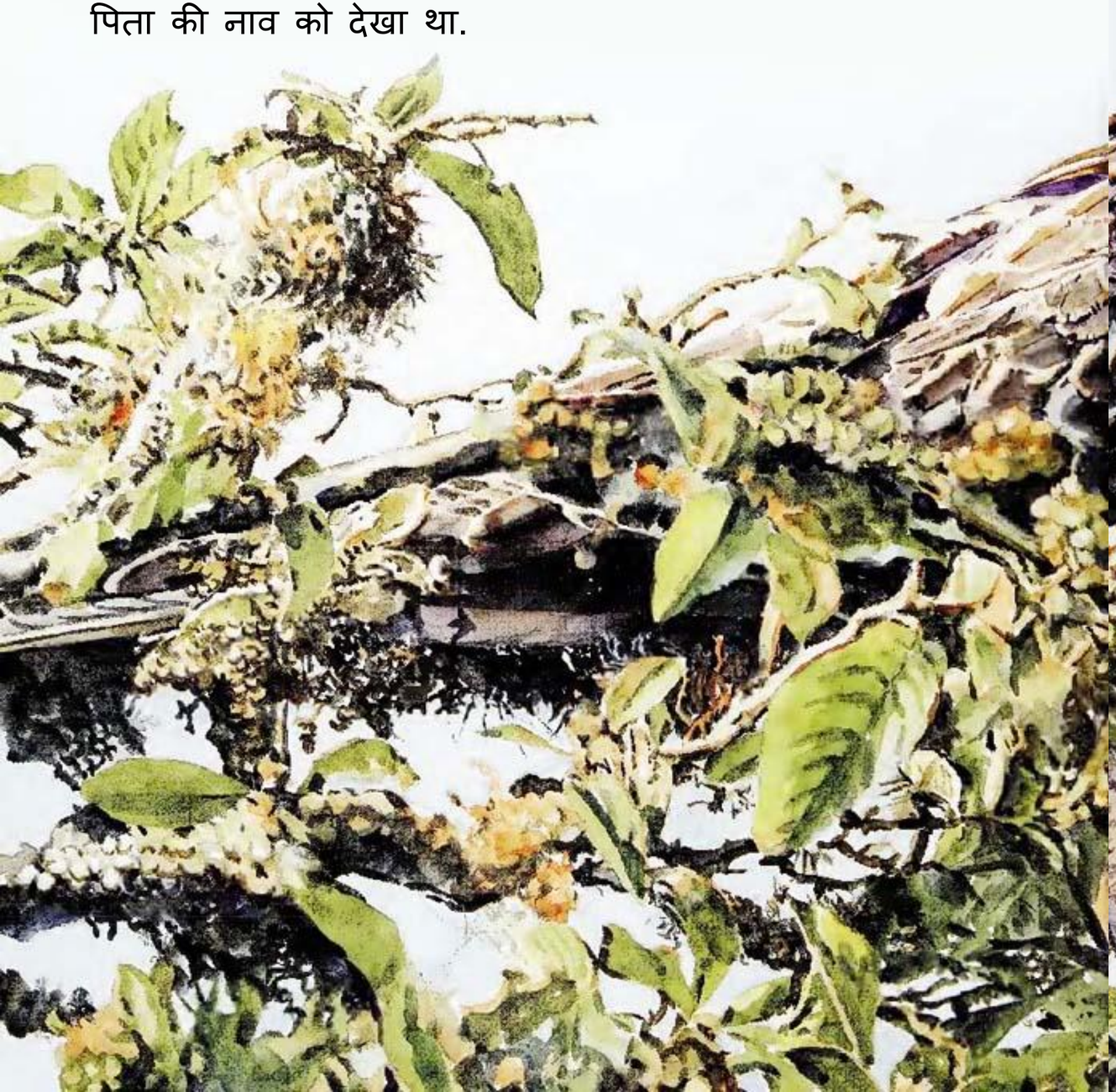

नीलो को भूख लग गई. वह एक झाड़ की छाया में बैठ गया और अपने थैले से केला निकाल कर खाने लगा. सुसकार की आवाज़ सुन कर नीलो ने सामने देखा. सामने मोटी टांगों वाला एक विशाल कछुआ था, धुंध में गीले हो रखे उसके खोल से पानी की बूँदें टपक रही थीं. उसने अपनी गर्दन ऊंची उठा रखी थी जैसे कि वह आकाश से आती आवाज़ें सुन रहा था.

एक नन्हा पक्षी आकर उस पर बैठ गया, दूसरा पक्षी आया फिर तीसरा आया. पक्षी उन कीटों को खाने लगे जो कछुए का लहू चूस रहे थे. नीलो उसके निकट आ गया.

लड़के ने कछुए के सिर से एक कीट को निकाल दिया. कछुए ने गर्दन आगे बढ़ा दी और प्रतीक्षा करने लगा कि वह और कीट भी निकाल दे.

नीलो ने कछुए के चिकने खोल को अपनी अँगुलियों से छुआ. कछुए की ऊंची पीठ पर सवारी करने के अपनी इच्छा को वह दबा न पाया. उस पर चढ़ कर उसने अपना कान को खोल पर दबा दिया. घास-पत्तियाँ खाते समय कछुए के अंदर से जो सुसकारने की आवाज़ें आ रही थीं उन्हें वह सुन पा रहा था.

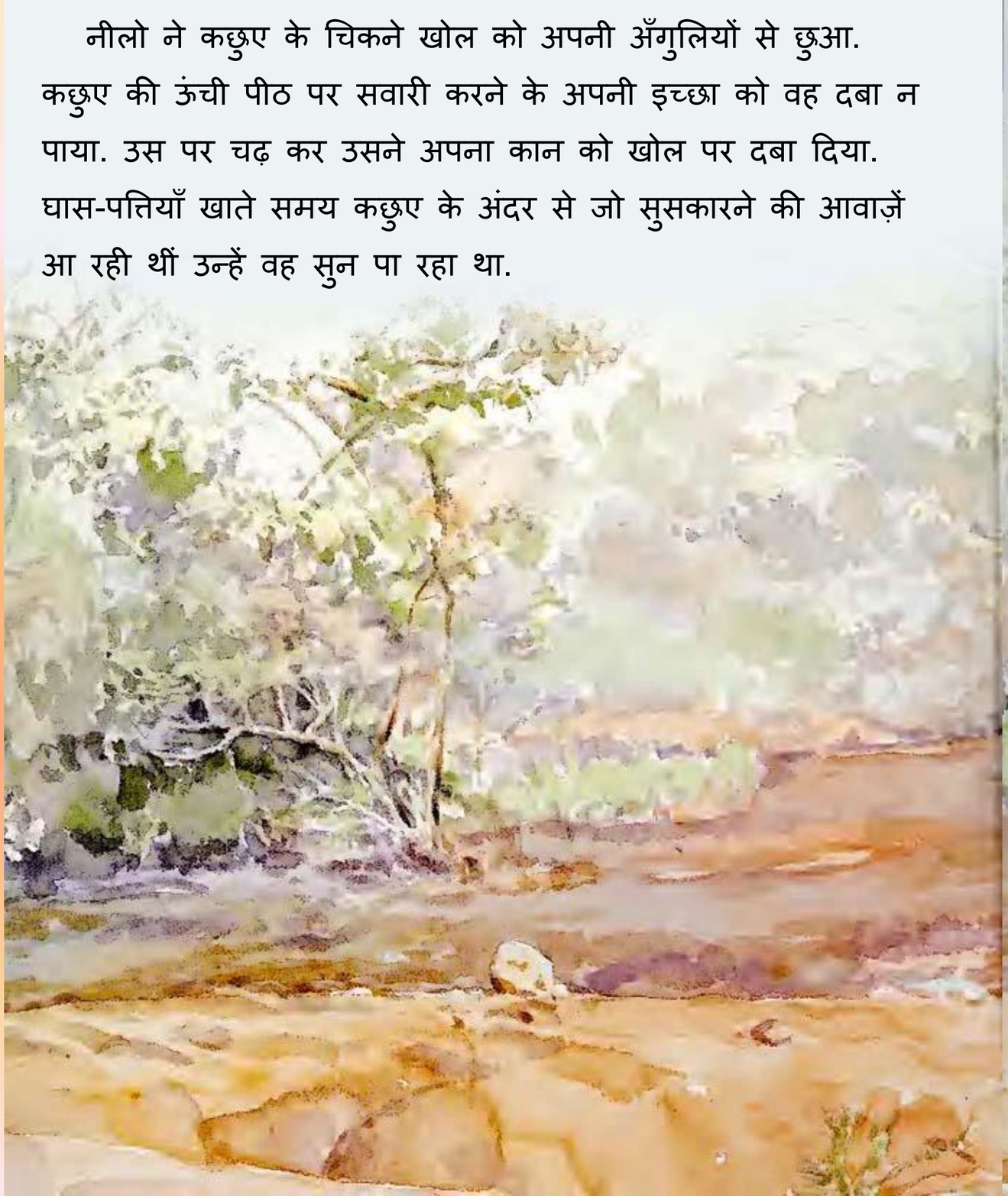

जैसे ही अँधेरा हुआ, कछुए ने ज़मीन में एक गड्ढा बना लिया. नीलो ने उसकी सहायता की. कछुआ उस गड्ढे में बैठ गया. नीलो को भी नींद आ रही थी. अपने को सुरक्षित पाते हुए कछुए के पास लेट कर सो गया.

बाज़ की चीख सुन कर वह नींद से जाग गया. वह जानता था कि अब उसे जाना चाहिए. नीलो ने कछुए को अपने बचे हुए फल खिला दिए. उसे अलविदा कहा और चल पड़ा.

ढलान वाले धूल भरे रास्ते पर बाज़ के
पीछे चलते हुए वह समुद्र के किनारे आ गया
जहाँ उसके पिता उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे.

विशाल कछुआ

विशाल कछुओं का वज़न 300 किलोग्राम तक हो सकता है. वह दो सौ वर्ष तक जीवित रहते हैं. वह घास, पत्तियाँ, फूल और कँटीले कैक्टस खाते हैं. जो कीट उनके शरीर पर पलते हैं उन्हें पक्षी खा जाते हैं. उनके मल पर जो मक्खियाँ पलती हैं उन्हें पक्षी और छिपकलियाँ खा जाती हैं. एलसीडो ज्वालामुखी पर्वत पर चार हज़ार कछुए रहते हैं.

फिंच

गहलापगस द्वीप समूह पर तेरह प्रकार के फिंच पक्षी पाए जाते हैं. हर प्रजाति की अपनी विशिष्टता और अलग आवाज़ होती है.

कैलिफ़ोर्निया सी-लायन

सी-लायन समूहों में रहते हैं. हर समूह में एक नर, कई मादायें और बच्चे होते हैं. नर अपने समूह की रक्षा करता है. सी-लायन बहुत चंचल होते हैं और समुद्र में तैरने वाले लोगों के निकट आ खेलने लगते हैं. यह कैलिफ़ोर्निया, जापान और गहलापगस द्वीप समूह पर पाए जाते हैं.

गहलापगस बाज़

अमेरिका में पाए जाने वाले लाल-पूंछ वाले बाजों से यह मिलते-जुलते हैं लेकिन गहलापगस बाज़ सिर्फ गहलापगस द्वीपों पर ही पाए जाते हैं. अन्य बाजों के विपरीत, यह बाज़ इंसानों के निकट आने पर दूर नहीं भागते. नर और मादा दोनों मिलकर बच्चे पालते हैं, ऐसा व्यवहार अन्य बाज़ नहीं करते.

व्रमिलियन फ्लाईकेचर

यह पक्षी भी गहलापगस द्वीपों पर पाया जाता है. नर लाल और काले रंग का और मादा भूरे-स्लेटी रंग की होती है. यह पक्षी हवा में उड़ते हुए कीट पकड़ कर खा जाता है.

गहलापगस द्वीप

गहलापगस द्वीपों पर कई प्रकार के धरती और सागर में रहने वाले पक्षी, छिपकलियाँ, सांप, चमगादड़, पेंगुइन, सील, पानी और धरती पर रहने वाले इगुआना रहते हैं. द्वीपों के चारों ओर सागर में डॉलफिन, ओरका और व्हेल रहती हैं.

१५३५ में इन द्वीपों का पता लगा था. द्वीपों की खोज होने के बाद लोग मवेशी, गधे, बकरियाँ, बिल्लियाँ, सूअर और चूहे यहाँ पर ले आये. लेकिन इन प्राणियों के आने से यहाँ के पर्यावरण पर संकट आ गया है और यहाँ पर आरम्भ से रहने वाले प्राणियों के मिट जाने की आशंका बढ़ गई है.

प्रिय पाठक

गहलापगस द्वीपों की अपनी यात्रा के अनुभवों से प्रेरित होकर मैंने यह कहानी रची है. यह द्वीप इक्वेडोर से ६०० मील दूर प्रशांत महासागर में स्थित हैं. जो पशु यहाँ रहते हैं उन्हें इंसानों का कोई भय नहीं है. यहाँ के विशाल कछुओं जैसे प्राणी धरती पर कहीं ओर नहीं पाए जाते.

इसाबेला द्वीप पर घटी घटनाओं के आधार पर मैंने यह कहानी लिखी है. एक क्रोधी सी-लायन से बचने के लिए मुझे भागना पड़ा था. मैंने एक व्रमिलियन फ्लाईकेचर को हवा में नृत्य करते देखा था. एलसीडो ज्वालामुखी की कठिन चढ़ाई चढ़ी थी. ठंडी धुंध में कांप गया था. एक बाज़ मेरे निकट ही उड़ रहा था. एक फिंच को कछुए के शरीर से कीटों को खाते देखा. कछुए के निकट सोया. अगली सुबह समुद्र किनारे आकर देखा कि मेरी नाव की बैटरी खत्म हो गई थी और उसे बदलने की आवश्यकता आ पड़ी थी.